Item Code: 645 Participant Code: 037

नारियाँ - नौकरी क्षेत्रों में

मनुष्य का जीवन अनुभवों और शिक्षाओं से भरी एक लंबी यात्रा है। यह लहरों से भरे सागर की तरह है; जिसमें सुरक्षित किनारे तक पहूँचने के लिए उसे बुद्धि और दृढ संकल्प का आवश्यकता होती है। मनुष्य के बीच "महिलाओं और पुरुष" जैसे भेदभाव अब भी मौजूद है। हर पीढ़ी अपने से पहले की पीढ़ी से अलग समय में जीती है। नए चुनौतियों का सामना करती है। इसलिए, उसे अधिक जागरूक, बिचार-शील और ~~रचनात~~ रचनात्मक होना चाहिए। आज दुनिया में जो विकास हो रहा है, उसने जीवन के किसी भी पहलू को अछूता नही ~~छोड़ा~~ छोडा है। और उस विकसन से नारियों ~~के~~ को अपना हक्क मिलने शुरू हुआ है। ज्ञान सबसे बड़ा हथियार है जो ~~स्त्र~~ स्त्रियों को अपने हक्क के लिए लडने का शक्ति दिया है। ज्ञान किसी भी ~~भाइ~~ मुश्किल काम को आसानी से तोड़ना आता है। जैसे कि "अरस्तू" ने कहा : "ज्ञान के बिना जीवन

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തിയ്യതി....................
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 645 Participant Code: 037

गहरे अंधकार के समान है"। इसलिए, ज्ञान और बिचार ही वह प्रकाश है, जो आज कल मनुष्य को, खास करकर महिलाओं को अज्ञान्ता और भड़काव की अंधेरी राहों से बचाते है। इसी आधार पर, आज के ज़माने के एक महत्वपूर्ण बिशय: "नारियों - नौकरी क्षेत्रों में" के बारे में अधिक जानना आवश्यक है। यह व्यक्तियों और समाज पर भी गहरा प्रभाव डालता है। इसलिए, इसपर प्रकाश डालना चाहिए ताकि इस बिशय के अर्थ और महत्व को समज सकें।

आज के नई पीढ़ी एक ऐसे समय में जी रही है जहाँ तकनीकी विकास ने जीवन के हर क्षेत्र को पूरी तरह बदल दिया है। इस विकसन से पुरुष से भी ज़्यादा फायदा नारियों को मिला है। उन्होंनें अपने आप के लिए जीना शुरू कर दिया है।

पहले, और आज; दोनों के ज़माने में कई ज़्यादा फर्क है। महिलाओं तकनीकी विकास के साथ - साथ अपने आप के लिए कुछ करने के लिए आगे आ चुका है। भारत स्वातंत्रा के पहले नारियों मर्दों का गुलाम माना जाता था। समाज के डर से उन महिलाओं भी अपने के लिए आवाज़ नही उठाया था।

भारत स्वातंत्रा के समय "महात्मा गांधी" की मेहनत की वजह से नारियों अपने चार दिवारों से बाहर आया और अपने देश की स्वातंत्रा के लिए आवाज़ उठाया। उन स्त्रियों ने निभाई हुई हिम्मत की वजह से आज भी नारियों उन लोगों को अपना मिसाल मानता है।

पुरुषों ने यह मानता था कि महिलाएँ बर्तन साफ़ करने के लिए और उनके बच्चों को जन्म देने के लिए ही है। लेकिन आज के हाल के हिसाब से बहुत ज़्यादा लोग नौकरी करना शुरू किया है जिसको मिसाल बनाकर आज के छोटे लडकियाँ भी ज़िंदगी में कुछ करना चाह रहा है।

आज के ज़माने में महिलाएँ हर एक क्षेत्र में मौजूद है। लेकिन फिर भी पुरुषों के मौजूद देखते तो यह साबित हो जाता है कि अब भी बहुत ज़्यादा महिलाएँ है जो अबी भी अपने घरों से बाहर नही निकला हुआ है। सामान्य बोध से ये देखा जाए तो इस समस्या का कारण यही मिलेगा कि औरत कुछ करना नही चाहते है। लेकिन "सोशियोलोजिक्कल इमेजीनै" से देखा जाए तो इसका कारण यही मिलेगा

कि कुछ महिला ~~अपने~~ जबरदस्त के कारण अपने ज़िंदगी में कुछ कर नही पा रहा हूँ।

आज के समय हर घरों मे महिलाएँ नौकरी करने का तात्पर्य पर आ रहा है। "कल्पना चाउला" जैसे हिम्मत भरी हुई लड़कियाँ देश के नाम रोशन करने लगा था। "कल्पना चाउला" को "भारत के पहले के भहिराकाश ~~प~~ इंसान" के नाम पर पुरस्कार दिया गया था। बहुत ज़्यादा पुरुष होने के नाते भी "कल्पना चाउला - एक महिला हि क्यू? यह ~~सवाल~~ सवाल से ~~आकर्षि~~ आकर्षित होकर बाकि सारे नारियों भी नौकरी करकर अपने और अपने देश के नाम रोशन करना शुरू किया।

~~ई~~ जीवन के हर एक नौकरी करने वाले क्षेत्र में महिलाएँ का सानिध्य बढ़ चुका है। जैसे की पुलिस, एयर फोर्स, नेवी, अध्यापिका, बैंक मानेजर। इन सबी में महिला अपने हक्क पाने के लिए आगे आ चुका है।

~~ि~~ बाकि ~~सभी~~ सबी राष्ट्रों को गहराई से देखने से यह समझ सकता है कि भारत में अबी भी महिलाओं का नौकरी क्षेत्र में आना कम है।

2021 के एक अध्ययन से यह साबित हुआ है कि "भारत जनता पोपुलेशन ~~के~~ हिसाब से महिलाएँ पुरुषों से भी ज़्यादा है। फिर भी महिला पुलिस फोर्स में आने वालों में सिर्फ और सिर्फ 10% ही ~~है~~ है। इसका मतलब यह है कि आज भी दुनिया में ऐसे लोग है जो अपने हक्क पाने के लिए, और अपने तरीके से अपने जीवन जीने के लिए आवाज़ उठाने पर डर रहे है।

"वी. टी भट्टतिरीप्पाड" के प्रशस्त नाटक "अडुक्कल-पिल निन्न अरंगत्तेक" में ~~स्त्रि~~ स्त्रियों को अपने चार दिवारों के अंदर से बाहर आने का हिम्मत देता है। और उस नाटक के फल से "केरल" में महिलाएँ कई ज़्यादा नौकरी करना शुरू किया गया है। और इसी विकास ने "केरल" को भारत के सबसे अच्छे विकसित ~~सब~~ राज्य बना दिया है। इन सबी के फल से आज "केरल" आर्थिक और सामाजिक रूप से कई ज़्यादा आगे निकल चुका है।

आज कल कई घरों में महिलाएँ नौकरी करने वाले होता है। जहाँ तक अब नारियों "भारतीय आर्मी" में भी शामिल हो रहा है। और

इस बात के सबसे बड़ा सबूत है "भारत, केरल, वायनाद" में हुवा कर्म। जब पर्यावरण ने उन मासूमों को धमकाया, तब "भारतीय सेना" में से एक शेरनी वहाँ एक पुल चुटकियों में बनाने का ~~नेत्रत्व~~ नेत्रत्व दिया था। उसके साथ - साथ "पहल्गाम" में हुवा "आतंकवादी हमला" पर "आपरेशन सिंदूर" भी एक "सोफिया" नाम की शेरनी ने नेत्रत्व दिया था जो बहुत ज्यादा लोग को इंसाफ़ दिलाने पर कामयाब हो चुका था।

~~क~~ कई ज़माने पहले भी "राणी लक्ष्मी भाय" जैसे महा शेरनी अपने ताकत को दुनिया के सामना दिखाया था। जब "अंग्रेज़ों" ने उसका पालस पर आग लगाया, तब अपने पिछवाड़े में अपने बच्चे को बांदकर एक हाथ पर हथियार रखकर ~~उनर~~ उन्से लड़ा था।

केरल के नारियों को आर्थीक व्यवस्था पर पूरे तरीखे से शामिल करने के लिए "सरकार" अपने छोटी और बड़ी कोशिश जारी कर कर रखा है। महिलाओं का आत्म विशवास बड़ाने के लिए "महिला सुरक्षा के लिए आक्ट" भी भारतीय ~~संविधान~~

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തീയതി....................
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

संबिधान ने दिया है।

"कैरल" के महिलाओं का आत्म बिश्वास बढाकर उनको नौकरी में शामिल करने के लिए कैरल सरकार ने बहुत ज़्यादा भूमिका अब निभा रहा है। "वुमेन सेल्फ हेल्प ग्रूप" उन महिलाओं का छोटे-मोटे सालरी मिलने का क्षेत्र है। आज पड़ोसि नारियाँ मिलकर "कुडुंबश्री" चला रहा है जिस से उन्हें अपने छोटे-छोटे इरादों को पूरी करने के लिए मदद करते है।

"द 3 एल्स ऑफ एम्पवरमेंट" ने नारियों को उनके हक्क के बारे में समझा देता है। खुद के लिए कदम उठाने के लिए यह लेख नारियों को बहुत ज़्यादा प्रेरित करते है।

"कैरल हरित कर्म सेवा" पद्धि में नारियों को ही काम के लिए चुना गया है। क्योंकि सरकार के साथ-साथ और पुरुषों को भी महिलाओं का आगे आने का महत्व समझ में आ चुका है।

छोटी और बड़ी इलाकों अबी नारियाँ राजनीतिक अधिकार के लिए भी लड़ रहा है।

यहाँ तक हमारा प्रसिडंट "डराऊपती मुरमू" भी एक महिला है जिसने एक महिला या पुरुष होने तरफ़ से नहीं, ~~बल्कि~~ बल्कि एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के हिसाब से अपना ~~कर्त~~ कर्तव्य पूरे इमांदारी के साथ निभा रहा है।

"जापान, चैना" जैसे विकसित देश में पुरुष और महिला, दोनों ~~४~~ बराबर काम करते है। हर घर के ~~ह~~ हर महिला और मर्द अपने देश के आर्थीक व्यवस्ता को बढाने के इरादा में है।

"नासा जैसे बड़ी-बडी संकठन में भी आज नारियाँ काम कर रहा है। वैज्ञानिक, अभिनेत्री, पुलिस, अध्यापिका, ट्रावल एजंसी जैसे काम भी अब स्त्रियों बहुत अच्छे से कर रहा है।

पहले के ज़माने में महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग सालरी देती थी- एक ही काम करने के ~~बावजूद~~ बावजूद भी। लेकिन, अब अकल ठिकाने लाने से बराबर काम करने को बराबर सालरी भी दे जा रही है। अब नौकरी के क्षेत्र मे मर्द या महिला- दोनों मायने नहीं रखता

है।

हर पुरुष की तरह अब महिलाओं को भी रात की ~~ड्यू~~ काम दी जाती है। यह पुलिस ~~और~~ नेवी और भारतीय सेना में भी ऐसा है। क्योंकि आज के भारतीय संविधान यह मानते है कि काम करने के समय, ~~वर्दी~~ वर्दी अपने शरीर पर होने तक के समय कोई भी मर्द या महिला नही होगी, सिर्फ और ~~स~~ सिर्फ ~~इं~~ इन्सान होगी।

महिलाओं के यह सफलता आज भी कुछ घमंडों को असामान्य लगता है और वे लोग स्त्रियों को बेकाम और बेघर होना देखना चाहते है। "महात्मा गांधी" ने कहा हुवा वाक्य: "आपका भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आज आप क्या कर रहा रहे"। यही सोच दिल पर लेकर नारियाँ अपने भविष्य को महफूज़ रखने के लिए उन्के पूरे कोशिश कर रहा है।

"ए.ऐ" ~~जैसे~~ के "चाट.जी.पी.टी, जेमिनै, मेटा.ए ऐ" जैसे तकनीकी विकास ने महिलाओं को ऑफलाइन और डिजिटल बोध भी दे दिया है। इसके कारण अब

नारियाँ स्वंय डिजिटल बेसनेस, और ए.ऐ संबधिद और काम भी करने का सक्षम रखना है।

"जेन.ज़ी" 1997 से 2012 के बीच जन्में है, जबकि "जेन. आल्फा" 2013 से 2026 (यानी को वर्तमान) के बीच जन्में है। "जेन.सी" ग्लोबल कनक्टिविटि और इंटरनेट के साथ अपने जीवन बिताया। जबकि जेन. आल्फा पैदा होने के समय ही हाई इंटरनेट और डिजिटल डिवाइस मौजूद थे। यानी उन्कें जनम पूरे डिजिटल युग में हुआ था। नारियों को देखा जाए तो जेन.सी से भी ज़्यादा काम करने का ताकत जेन. आल्फा रखता है। क्योंकि उनके कक्षों में अबी भी रोजगारी की महत्व को सबसे ऊँचाई पर रखा हुवा है। यह उन्को अकेले कोई भी बड़ी काम चुटकियों से निपटाने का ताकत देता है।

जेन आल्फा और नारियों से भी ज़्यादा ए.क्यू पायी हुवी है जिस्के वजह से उन्को अपने भविष्य के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नही है।

हर देश के तरह हमारा भारत को भी

महिला संकठन को आगे निकलवाना है। और इसलिए सरकार के साथ - साथ हर किसी कोई भी इसका महत्व जानना आवशयक है।

अब भी भारत में महिल नौकरी करने वाली महिला पुरुषों से कम है। और इन स और यह लेवल बढ़ाना हर किसी का काम है। खास कर कर महिलाओं का। महिलाओं का इज़्ज़त समाज में तबी बढ़ जाएगा जब वे उन्के लिए आवाज़ उठाना शुरू करते है और अपने के लिए नौकरी करना शुरू करने लगाता है। नारियें पहले भी ताकत्वार थी आज भी है और कल भी रहूँगा। यह आत्म बिश विश्वास उन्कों भी रख लेना चाहिए।

इस निबंध के अंत में, महिलाओं का महत्व और समाज को आगे बढ़ाने में उन्का भूमिका कि थी भी बहुत अच्छे से दिखाई देता है। और अब भी कुछ महिला अपने आप को नौकरी करने के लिए ताकत्वार नही समझते है। यह बड़ी समस्या है। अ अब, यह स्पष्ट हो जाता है कि इस समस्या का प्रभाव केवल नारियों पर नहीं,

बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र पर गहराई से पड़ता है। दुनिया के कई शोध बताते है कि हर साल लाखों लोग इन ~~समस्याओं~~ समस्याओं के कारण मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से प्रभावित होते हैं। और समय रहते कदम न ~~उ~~ उठाए जाए तो आने वाली पीढ़ियों को भी इसका और बड़ा दुष्परिणाम झेलना ~~पड़~~ पड़ सकता है। आज के समय मे यह सच्च है कि ~~नारि~~ नारियों के समस्याएँ बढ़ रहा है। लेकिन, यह भी उतना ही सच्च है कि ~~जा~~ जागरूक नागरिक, सही दिशा और मज़बूत संकल्प किसी भी समस्या का समाधान बना सकता है। "महात्मा गांधी" का एक सोच यहाँ बिल्कुल सार्थक है: "आप दुनिया में जो बदलाव देखना चाहते हैं, पहले वह बदलाव खुद बनिए।" यही सोच को आधार बनाकर हमें अपने सोच, ~~व्य~~ व्यवहार, ज़िम्मेदारियाँ और दैनिक कार्यों पर ~~समा~~ सकारात्मक ~~परि~~ परिवर्तन लाने कि आवश्यकता है। अंत में, यह निष्कर्ष केवल शब्दों में सीमित न रखते हुवे, हमें एक दृढ संकल्प लेना चाहिए: "कि मैं जिम्मेदारी से

सोचेंगे, सही कदम उठाऊँगे, महिलाओं को भी वही इज्जत देंगे जो पुरुषों को देना था और अपने ~~देशों को~~ देश को बुराइयों से मुक्त करकर साफ़ और सुंदर, एकता भरी ~~हुवी~~ हुई देश जैसे बनाऊँगी। तब ही सही मायने में हर किसी को बराबर का हक्क मिलेगी।